

सेर्गेई मिखाल्कोव

# अन्धविश्वासी शेकी टेल



# अन्धाविश्वासी शेकी टेल

सेर्गेई मिखाकोव

हिन्दी रूपान्तर : नमिता  
आवरण एवं रेखांकन : रामबाबू



अनुराग ट्रस्ट

# सिद्धान्तसिद्धि रुद्र तिरुति

संस्कृत-हिन्दी शब्दकोश

सर्वाधिकार सुरक्षित

मूल्य : 15 रुपये

पहला हिन्दी संस्करण : जनवरी, 2008

प्रकाशक

अनुराग ट्रस्ट

डो-68, निरालानगर

लखनऊ-226020

लेजर टाइप सेटिंग : कम्प्यूटर प्रभाग, राहुल फाउण्डेशन  
मुद्रक : क्रिएटिव प्रिण्टर्स, 628/एस-28, शक्तिनगर, लखनऊ



# अन्धविश्वासी शेकी टेल

शेकी टेल नाम का एक खरगोश जैसा तुम ठीक-ठीक अनुमान लगा सकते हो कि वह पृथ्वी पर सबसे बहादुर खरगोश नहीं था, इसके विपरीत अभी तक मौजूद खरगोशों में सबसे ज्यादा कायर था। वह हर तरह के तुच्छ हास्यास्पद अन्धविश्वासों पर विश्वास करता था और हमेशा इस बारे में चिन्तित रहता था कि उसके साथ कुछ बुरा होने वाला है।





और अन्त में ऐसा ही हुआ।

शेकी टेल का प्लेन (जहाज) तेरह तारीख शुक्रवार को एयरपोर्ट से रवाना होने वाला था। कोई अन्धविश्वासी खरगोश सपने में भी नहीं सोच सकता था कि 13 तारीख को शुक्रवार के दिन वह उड़ान भरेगा। हर कोई जानता था कि यह अशुभ दिन है। लेकिन उसके पास और कोई रास्ता न था, उसने टिकट खरीद लिये थे और बहुत ही जरूरी काम के लिए उसे जाना था।



शेकी टेल ने टिकट पर छपे हुए नम्बर को देखा : यह 2353 था।

उसने जोड़ना शुरू किया : दो प्लस तीन, प्लस पाँच, प्लस तीन... तेरह! उसे थोड़ी सिहरन महसूस हुई जो रीढ़ और पूँछ तक जा पहुँची। उसने तय किया कि वह उलटी तरफ से गिनेगा : तीन प्लस पाँच, प्लस तीन, प्लस दो... फिर तेरह! उसने देखा कि उस भयानक नम्बर से छुटकारा नहीं है!

जब उसके फ्लाइट की घोषणा हो रही थी, यह फ्लाइट नं. 13 है और प्लेन का नं. 13-13 है, बेचारा शेकी टेल चौंक गया। प्लेन में अपनी सीट लेने के बाद उसने चारों ओर नजर दौड़ाई। फ्लाइट में बहुत सारी सीटें खाली थीं।



बिली बकरा और नैनी बकरा सामने थे। एक साथ वे लगभग 100 के बराबर थे। बिली अपनी सफेद दाढ़ी के साथ एकदम विद्वान लग रहा था। सम्भवतः वह बन्दगोभी का र तो कम से कम था ही।

दाहिनी ओर खिड़की के पास कंगारू बैठा था। वह अपने बच्चे कंगारू के साथ था जो अपनी माँ का प्रतिबिम्ब था। वह अपना सिर बार-बार अपनी माँ के थैले से बाहर निकाल रहा था।

उसके पीछे मोटी सूअरी थी। बड़ी मुश्किल से वह अपनी सीट में समा पाई थी। जैसे ही वह स्थिर हुई उसने अपना नीला चेनदार बैग खोला और यात्रा के लिये लाये हुए सामान को चबाना शुरू कर दिया।

सूअरी से एक गलियारे की दूरी पर पूक था। वह उन महत्वपूर्ण दिखने वाले कुत्तों में से एक था। यह कहना मुश्किल था कि वह कितने साल का था। उसकी आँखें पनीली थीं, लेकिन डॉग शो के हिसाब से वह बहुत सुडौल थीं। शेकी टेल, जिसकी सीट बहुत दूर नहीं थी, ने देखा कि उसके कॉलर में बहुत सारे चाँदी के मेडल झूल रहे हैं। पूक अपनी सीट पर पीछे की ओर झुककर 'पशु चिकित्सा गजेट' पढ़ने लगा।

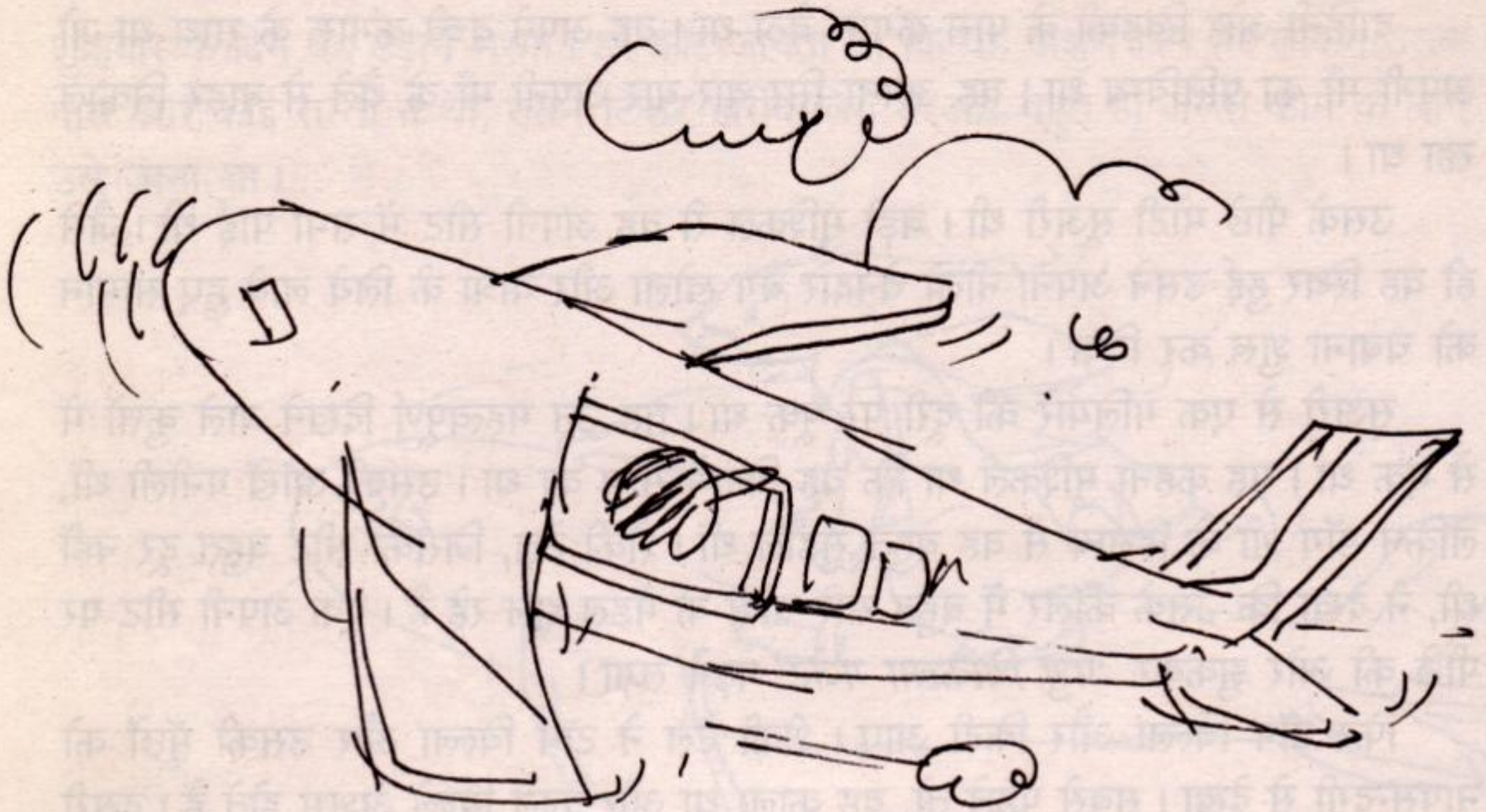
फिर टॉम बिल्ला और किटी आए। शेकी टेल ने टॉम बिल्ला और उसकी मूँछों को नापसन्दगी से देखा। सबसे पहले तो, वह काला था और काले बिल्ले अशुभ होते हैं। दूसरी बात, वह बहुत बदतमीज था। वह म्याऊँ-म्याऊँ करता और अपनी पत्नी के कान में जोर-जोर से घुरघुरा रहा था। जो भी हो वह टॉम के इतना ध्यान देने पर इतरा रही थी, शर्मते हुए मुस्कुरा रही थी और जवाब में घुरघुरा रही थी। शेकी टेल समझ नहीं पा रहा था कि वह क्या कह रही है, तभी इंजन ने घरघराना शुरू कर दिया।

प्लेन नं. 13-13 ने धीरे-धीरे विमान क्षेत्र से उड़ान भरना शुरू किया। अचानक जहाज झटके से मुड़ा और एक क्षण के लिए रुक गया, जैसे कि उड़ने से पहले उसने एक गहरी साँस ली हो। फिर दोनों इंजनों ने घरघराना शुरू किया, तेजी से आगे बढ़ा और विमान क्षेत्र को नीचे छोड़ दिया। दूसरे ही क्षण वह हवा में उड़ने लगा। जैसे ही प्लेन ऊँचा उठता गया इमारतें और विमान क्षेत्र छोटे से छोटे होते गये। शेकी टेल डर की वजह से जिन्दा होने से ज्यादा मरा हुआ था। यह उसकी पहली उड़ान थी। और अगर उसको उस जरूरी काम में न शामिल होना होता तो वह कभी भी प्लेन से न जाता।

“ठीक है, मैं उड़ रहा हूँ।” अपने दोनों पंजों से सुरक्षा बेल्ट के बकल को पकड़कर उसने



खुद से कहा। “अब मुझे इस बात की चिन्ता करनी होगी कि यह सही-सलामत उतार देगा। अगर यह शुक्रवार की तेरह तारीख नहीं होती तो मैं प्लेन में बहुत मजे करता। आखिरकार तुम हमेशा दूसरों को उड़ने के बारे में सुनते हो।”



इससे उसको थोड़ी राहत मिली और उसने तय किया कि वह खिड़की के बाहर झाँकेगा। सच कह रहा हूँ, उसे यकीन ही नहीं हो रहा था कि नीचे वह सारी जिन्दगी उछलता और फुदकता ही रहा था और अपनी नाक के इर्दगिर्द से परे उसने कुछ भी नहीं देखा था। अब प्लेन से बाहर देखते समय अचानक वह पृथ्वी के इतने बड़े अंश को देख सकता था, जंगल और मैदान, झील और सड़कें। यह आश्चर्यजनक, अद्भुत नजारा था।

“आमतौर पर यह ठीक नहीं है!” उसने सोचा। “एक सामान्य गौरैया, या चिड़िया अपने पंखों को थोड़ा-सा फड़फड़ाकर हर रोज ऐसा दृश्य देख सकते हैं, जबकि हम खरगोश ऐसा दृश्य तभी देख सकते हैं, जब हम प्लेन का टिकट खरीदें!”

प्लेन में अचानक झटका लगा। फिर सहसा उड़ने लगा।

“ऐसा है यह!” शेकी टेल फुसफुसाया और अपना सिर घुमाने लगा। “बेहतर है कि मैं सो जाऊँ। जितनी जल्दी मैं ऐसा करूँ उतना ही अच्छा होगा।” वह अपनी सीट पर पीछे की ओर झुका और अपनी आँखें बन्द कर ली।



इस प्रकार टेक लगाकर जब शेकी टेल ने हर छोटी-छोटी चीजों पर सोचना शुरू किया तो उसके विचार दिमाग में धुँधले होकर गुथमगुथ्था हो गए। दोनों इंजनों की गुनगुनाहट उसे शिथिल बना रही थी। एक क्षण को उसे पक्का विश्वास हो गया कि वह सो गया है। पर जैसे ही उसने अपनी आँखें खोलीं उसके आश्चर्य का ठिकाना नहीं था और उसने महसूस किया कि आखिरकार वह सो नहीं सका था। व्यवहारतः बाकी सभी यात्री बेखबर सो रहे थे, आनन्द में खरटि ले रहे थे। बिली और नैनी बकरे भी सो रहे थे। कंगारू और बेबी कंगारू भी ऊँघ रहे थे। सुनहरी किटी टॉम बिल्ले के कन्धे पर अपना सिर रखकर घुरघुरा रही थी। सूअरी भी जोर-जोर से खरटि ले रही थी। वह कोई बुरा सपना देख रही थी और बार-बार नींद से चौंक पड़ती थी। केवल अकेला पूक ही जाग रहा था। वह अखबार पढ़ रहा था।

शेकी टेल ने खिड़की के बाहर देखा। वे साफ नीले आकाश और सफेद बादलों के भारी कम्बल के बीच काफी ऊँचाई पर उड़ रहे थे, जो बर्फ के एक ढँके मैदान जैसा लग रहा था।

“मैं शर्त लगा सकता हूँ कि उन सफेद पहाड़ियों पर कूदना बहुत अच्छा रहेगा!” शेकी टेल ने सोचा, लेकिन जल्दी ही उसने अपना इरादा बदल दिया, “नहीं, मेरे ख्याल से जितनी जल्दी और जितना सम्भव हो उनके ऊपर उड़ना ज्यादा अच्छा रहेगा।”

“क्या तुम बता सकते हो कि हम अब कहाँ हैं?” शेकी टेल ने पूक से डरते-डरते पूछा।

“कौए से पूछो!” पूक बड़बड़ाया।

“कौआ कहाँ है?” शेकी टेल ने विनम्रता से पूछा।

“दरवाजे के पीछे!” पूक ने पहले की ही तरह रूखेपन से जवाब दिया।

शेकी टेल उठा और गलियारे में चला गया। उसने नॉब को घुमाया और केबिन में घुस गया।

उसकी आँखों ने जो दृश्य देखा वह बहुत ही भयानक था। भालू पायलट नियंत्रक पर नीठी नींद में सो रहा था। नींद में वह अपने पंजे चूस रहा था और उसके जोरदार खरटि इंजन को भी मात दे रहे थे। उसका विमान चालक गौफर भी वायरलेस में उलझा हुआ सो रहा था। इयरफोन से कुछ बीपिंग और टूटने की आवाज हुई, लेकिन उनकी नींद में कोई बाधा नहीं पहुँची।

“यह भयंकर है।” शेकी टेल डर से फुसफुसाया। उसका दिल इतनी जोर-जोर से धड़क रहा था जैसे कि वह बाहर आ जाएगा। “मुझे उन्हें जगाना चाहिए!”

लेकिन उसकी सारी कोशिशें बेकार सिद्ध हुईं। उसने भालू को कन्धे पर धक्का मारा



और गौफर को झकझोरा, लेकिन दोनों में से किसी ने भी अपनी आँखें नहीं खोलीं। जबकि इस दौरान जहाज उड़ रहा था। डायल के चारों ओर हाथ घूम रहे थे। इंजन गड़गड़ा रहा था और किसी भी यात्री को कोई आइडिया नहीं था कि केबिन में क्या हो रहा है। बुरे लक्षण ने अपना काम शुरू कर दिया था।

शेकी टेल बुरी तरह थक गया था। वह अपनी सीट पर वापस लौट आया। अन्य यात्री भी अब तक जग गये थे। उनमें से कुछ खा रहे थे, कुछ ताश और चेकर खेल रहे थे।

“हम तबाही की ओर बढ़ रहे हैं! हमें कुछ करना चाहिए। हम इस तरह बैठे नहीं रह सकते।” यही सब सोचते हुए शेकी टेल जहाज के पिछले हिस्से में गया और बैगेज कम्पार्टमेण्ट में झाँकने लगा।

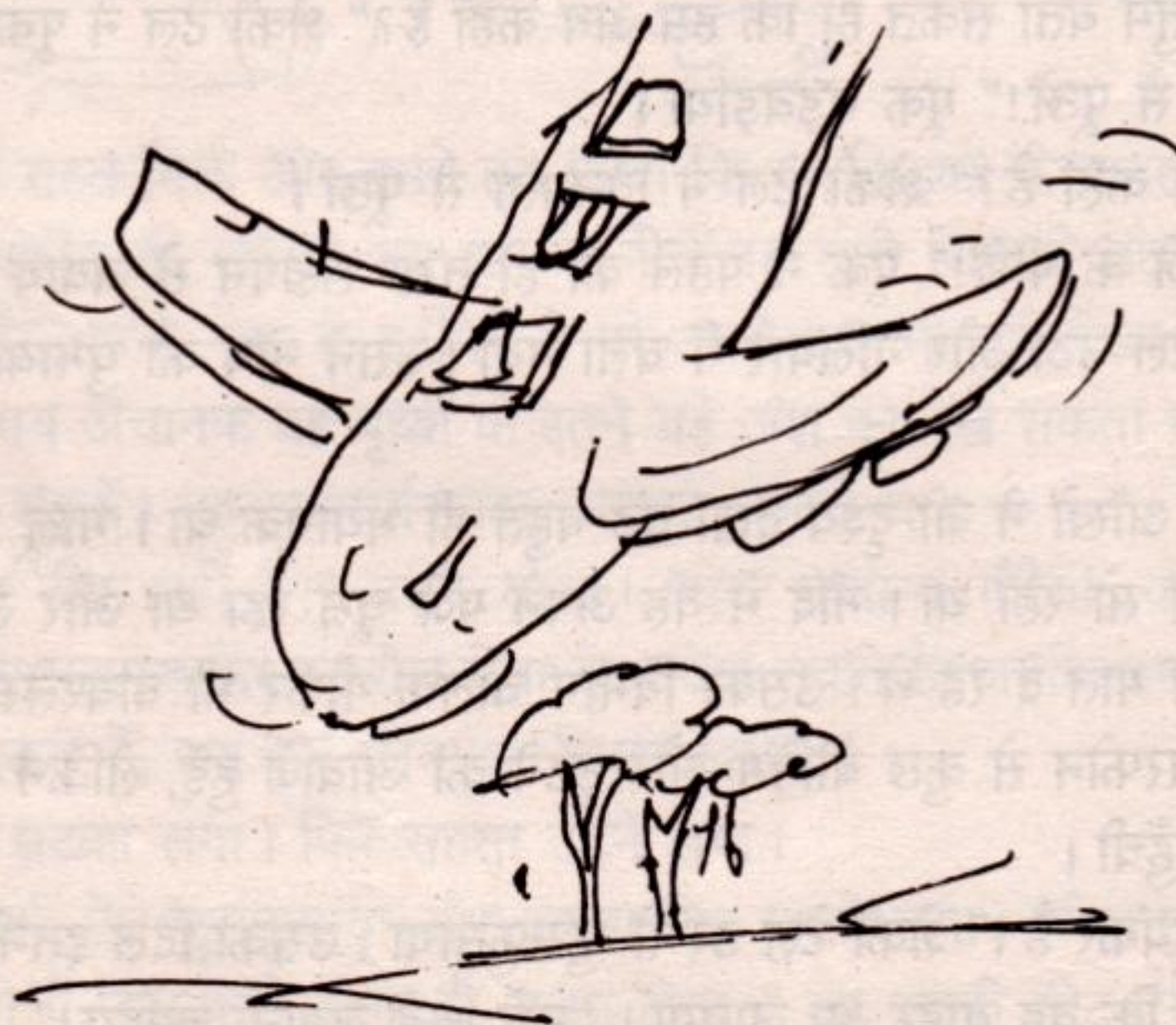
वह क्या था? वहाँ यात्रियों के सूटकेस और बैग के साथ दो पैराशूट भी थे।

सभी यात्री आश्चर्यचकित थे जब उन्होंने देखा कि शेकी टेल केबिन के दरवाजे पर झुका हुआ है। उसने अपने पंजे उठाकर सभी को शान्त रहने के लिए कहा।

“वह क्या चाहता है?” अपने साथी के कान की ओर झुकते हुए किटी घुरघुरायी।

“एक खरगोश से तुम क्या उम्मीद कर सकती हो?” टॉम बिल्ले ने घृणा से कहा।

जल्दी ही उसे अफसोस होगा कि उसने ऐसा कहा था।





शेकी टेल ने उन्हें बताया कि क्या हुआ था और अपने संक्षिप्त भाषण के अन्त में कहा : “डरो मत! अभी अपनी सीट पर रहो। केवल दो लोग ही कूदकर अपनी जान बचाने की कोशिश कर सकते हैं।”

“क्या यह खतरनाक नहीं है?” बूढ़े बिली बकरे ने अपनी धारदार आवाज में कहा।

“बोर्ड पर केवल दो पैराशूट हैं,” शेकी टेल ने गम्भीरता से कहा।

“हम नहीं कूद सकते,” बकरे ने कहा। “किसी छोटे को उसका इस्तेमाल करना चाहिए।”

“मैं! मैं क-क-कूदूँगा!” टॉम बिल्ला चीखा और डर से हकलाने लगा। यह तड़ाक से गलियारे में शेकी टेल की ओर बढ़ गया। “द-द-दो म-म-मुझे एक प-पैप-पैराशूट!”

उसकी घृणित आवाज पूरी तरह विलुप्त हो गई थी। अब उसके सारे बाल खड़े हो गये थे। सिर से पैर तक वह काँप रहा था।

“अपनी सीट पर वापस जाओ! और हकलाना बन्द करो!” शेकी टेल ने कहा।

टॉम बिल्ला ने अपनी सीट पर वापस जाकर अपनी पूँछ को पैरों के बीच सिकोड़ लिया। वह किटी पर बिल्कुल भी ध्यान नहीं दे रहा था। उसे केवल अपनी चमड़ी की फिक्र थी। बेचारी किटी धीरे-धीरे सिसक रही थी। वह डर से नहीं रो रही थी, बल्कि उसकी (टॉम की) सच्ची दोस्ती की डींगें मारने से शर्मिन्दा थी जबकि अब यह साबित हो चुका था कि वह कायर है और मुसीबत के समय काम नहीं आया।

शेकी टेल एक-एक करके हर यात्री के पास गया, लेकिन सभी ने, यहाँ तक कि सूअर ने भी कूदने से इनकार कर दिया।

“ईश्वर करे सब ठीक हो जाए!” उन्होंने कहा। शायद भालू जग जाए। हमने उसे जगाने की कोशिश नहीं की। लेकिन यह तो पक्का है कि हम कूद नहीं सकते। खैर, यहाँ पर केवल दो ही पैराशूट हैं। बाकी लोग क्या करेंगे?”

केवल टॉम बिल्ला ही अकेला ऐसा था जो जहाज छोड़ देना चाहता था।

हर कोई मुड़कर देखने लगा जब वह एक पैराशूट को झपटने के लिए पंजे हिलान लगा और उस पर साज चढ़ाने लगा। फिर उसने कूदने के लिए आधे खुले दरवाजे से पहले अपना सिर निकाला और चीखता हुआ चला गया।

यात्रियों ने भले ही लाख कोशिशें की हों लेकिन वे कर्मचारियों को जगा नहीं सके। भालू के कान में सूअर बड़बड़ाया, पूक गुराया और भौंका, बिली बकरा जोर से मिमियाया, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ।



इस हलचल से उसे मितली आने लगी थी।

बिली बकरे और नैनी बकरे ने डर से निजात पाने के लिए अपनी आँखों को कसकर बन्द कर लिया था। जरा-सा भी हिलने में वे डर रहे थे। तुम समझ सकते हो कि उन्हें अशुभ होने की आशंका थी।

शेकी टेल के हवा में कलाबाजी करने से केवल एक यात्री जो मजा ले रहा था वह बेबी कंगारू था। यह समझने के लिए वह बहुत छोटा था कि क्या हो रहा है। जब कभी जहाज अचानक से उड़ान भरता या नीचे आता तो वह जोर से चिल्लाता और हँसता था। वह सोचता था कि वह झूले में है।

पूक अब भी बहुत प्रभावशाली दिख रहा था और अपना पेपर पढ़ना जारी रखा था। हालाँकि वह पढ़ने का केवल ढोंग कर रहा था। शायद वह यह भी नहीं जानता था कि पढ़ा कैसे जाता है और बस पेपर को अपनी नाक के सामने ऊपर करके पकड़े हुए था ताकि वह प्रभावी दिख सके।

इस दौरान शेकी टेल बड़ी कठिनाई से पायलट बनना सीख रहा था। हालाँकि स्टॉक को इस बात का श्रेय जाता है कि उसके निर्देश एकदम स्पष्ट थे और अगर शेकी टेल कुछ ठीक नहीं भी करता, तो तुम उस पर वास्तव में आरोप नहीं लगा सकते थे। हालाँकि बहुत से जानवर उड़ सकते हैं, लेकिन वह पहला खरगोश था जिसने उड़ान भरी।

अब नीचे उतरने का समय आ गया था। शेकी टेल ने एक बड़ा चरागाह देखा और उसका चक्कर लगाया। चरागाह के चारों ओर पेड़ थे, लेकिन गनीमत थी कि बड़े-बड़े चीड़-देवदार के घने जंगल नहीं थे, बस एक तरुण बर्च के पेड़ों का बाग था। फिर भी वे पेड़ थे और जमीन पर लैण्ड करने से पहले उसे उनके ऊपर से उड़ना था।

शेकी टेल ने अपनी आँखें पेड़ों पर जमाकर स्टीयरिंग व्हील को दोनों पंजों से पकड़ लिया। वह जानता था कि सब कुछ उसी पर निर्भर है उसके साहस और इच्छाशक्ति पर। लेकिन तभी जब वह 13 तारीख का शुक्रवार न होता।

“लटके रहो, शेकी टेल!” जैसे ही जहाज उतरने को हुआ उसने खुद से कहा।

“शेकी टेल, लटके रहो!” एक सौम्य आवाज ने पीछे से कहा।

“अब यह तुम्हारे ऊपर है, शेकी टेल!” यात्री फुसफुसाये।

उसी क्षण पेड़ के ऊपरी सिरे से पंख का एक भाग छू गया। जहाज थरथरा रहा था, लेकिन गिरा नहीं।



दूसरा पल गुजरा। एक झटका हुआ, फिर दूसरा झटका और चरागाह के किनारे जहाज एक बहुत बड़े भूसे के ढेर पर रुक गया।

शेकी टेल ने अँगड़ाई ली और अपनी आँखें खोली। कितना आश्चर्यजनक है! जहाज लैण्ड कर गया। यात्री रैम्प से नीचे जा रहे थे। काला टॉम बिल्ला और जिंजर किटी सबसे अन्त में बाहर निकले। वह उधर नहीं देख रही थी जिधर से वे गुजरे जबकि उसका मुच्छड़ साथी अपने सूटकेस से शेकी टेल को बार-बार टक्कर मार रहा था और इस बात के लिए माफी माँगने की उसे परवाह नहीं थी।

शेकी टेल भौंचक था। क्या यह सब सपना था? आखिरकार उसने कोई बहुत बहादुरी का कारनामा नहीं किया। वह चिल्लाने जा रहा था। लेकिन तभी उसे दुर्भाग्यशाली लक्षण याद आ गया। यह तेरह तारीख का शुक्रवार था।

“क्या तुम कृपा करके मुझे समय बताओगे? उसने भालू से पूछा जो गलियारे से गुजर रहा था और अपनी पायलट की टोपी में बहुत सुन्दर दिख रहा था।

“13 घण्टे का धब्बा!” जहाज नं. 13-13 का पायलट अपनी रूखी आवाज में जवाब दे रहा था।

उस दिन से शेकी टेल ने अन्धविश्वास करना छोड़ दिया और हो गया... ठीक है, हम यह नहीं कह सकते कि वह सबसे बहादुर खरगोश था लेकिन अगर हम यह कहें कि वह सबसे बुद्धिमान था तो ज्यादा गलत नहीं होगा।





# फरेबी खरगोश



एक बार एक खरगोश के पंजे पर भालू का पैर पड़ गया।  
“ओह! बचाओ! मार डाला!”, खरगोश चिल्लाया।  
दयालु बूढ़ा भालू परेशान हो गया। उसे खरगोश के लिए बहुत दुख हुआ।  
उसने कहा, “कृपया मुझे माफ़ कर दो। तुम जानते हो कि मैंने ऐसा जानबूझकर नहीं किया है। यह महज़ एक दुर्घटना थी।”



खरगोश ने कहा, “तुम्हारी सहानुभूति लेकर मैं क्या करूँगा! तुमने मेरा पंजा कुचल दिया। अब मैं फिर से कैसे उछल-कूद पाऊँगा?”

भालू खरगोश को उठाकर अपनी गुफा में ले गया। उसने खरगोश को बिस्तर पर लिटाया और पंजे की मरहम-पट्टी करने लगा।

हालाँकि उसे ज्यादा दर्द नहीं हो रहा था फिर भी खरगोश चिल्ला रहा था, “बचाओ! ओह! मैं मर रहा हूँ।”

इस तरह भालू ने खरगोश की देखभाल करनी शुरू कर दी। वह उसे खाना खिलाता और उसका खयाल रखता था। हर सुबह जब वह जागता तो सबसे पहले यही पूछता, “आज तुम्हारा पंजा कैसा है? क्या पहले से कुछ बेहतर है?”

खरगोश जवाब देता, “मैं तुम्हें बता नहीं सकता कि कितना दर्द हो रहा है। मेरे खयाल से कल कुछ बेहतर था लेकिन आज पहले से कहीं ज्यादा दर्द हो रहा है। यहाँ तक कि मैं उठ भी नहीं सकता।” जैसे ही भालू जंगल की ओर जाता, खरगोश अपने पंजे से मरहम-पट्टी खोलकर भालू की माँद में चारों ओर उछलने कूदने लगता। और जोर-जोर से गाने लगता :



“भालू करता मेरी देखभाल  
लेकिन मेरी हालत है कमाल  
तकलीफ नहीं है मुझको कोई  
काम करा लो मुझसे कोई!”



खरगोश पूरे दिन कुछ नहीं करने और चुपचाप पड़े रहने से आलसी हो गया था। वह चिड़चिड़ा हो गया था और बड़बड़ाने लगा:

“भालू, तुम मुझे गाज़र के अलावा और कुछ क्यों नहीं खिलाते। कल भी गाज़र, आज भी गाज़र! पहले तुमने मुझे लँगड़ा बना दिया और अब चाहते हो कि भूख से मर जाऊँ? मुझे मीठी नाशपाती और शहद चाहिए।”

भालू मीठी नाशपाती और शहद लेने चला गया। रास्ते में उसे लोमड़ी मिली। उसने कहा, “कहाँ जा रहे हो मीशा? तुम बहुत परेशान दिख रहे हो।”

“मैं मीठी नाशपाती और शहद लेने जा रहा हूँ।” यह कहकर उसने लोमड़ी को पूरी घटना बता दी।

लोमड़ी ने कहा, “ये सब करने की क्या ज़रूरत? तुम्हें एक डॉक्टर चाहिए।

भालू ने पूछा, “वह मुझे कहाँ मिल सकता है?”

लोमड़ी ने जवाब दिया, “तुम्हें ज्यादा दूर नहीं जाना पड़ेगा। क्या तुम नहीं जानते कि मैं पिछले कुछ दिनों से एक अस्पताल में काम कर रही हूँ। मुझे खरगोश के पास ले चलो। मैं उसे बहुत जल्दी ठीक कर दूँगी।”

भालू लोमड़ी को अपनी माँद में ले गया। जब खरगोश ने लोमड़ी को देखा तो काँपना शुरू कर दिया। लोमड़ी ने उसे देखा और कहा :

“वह सख्त बीमार है भालू। देखो कैसे ठण्ड से काँप रहा है। बेहतर होगा कि मैं उसे अस्पताल ले जाऊँ। भेड़िया पैरों की बीमारी का विशेषज्ञ है। वह और मैं साथ मिलकर खरगोश का इलाज करेंगे।”

खरगोश माँद के बाहर गया और नौ दो ग्यारह हो गया।

लोमड़ी ने कहा, “देखा! वह कितनी जल्दी ठीक हो गया!”

भालू ने कहा, “हर दिन हम कुछ न कुछ सीखते हैं।” यह कहकर वह आराम करने के लिए बिस्तर पर लेट गया। जबसे खरगोश उसकी माँद में रहने लगा था वह फर्श पर ही सोता था।

...





अनुराग ट्रस्ट

लखनऊ